आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711
पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

प्रसार शिक्षा निदेशालय
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 5 अंक : 5 जनवरी, 2018 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. बी. आर. छीपा

कुलपति सन्देश

पशुपालन में विविधिकरण अपना कर कल को समृद्ध बनाएं

प्रो. बी.आर. छीपा

प्रिय, किसान एवं पशुपालक भाई और बहनों !

राम–राम सा।

नव वर्ष ''2018'' की बधाई देते हुए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि यह वर्ष आपके जीवन में सुख–समृद्धि और उन्नति कारक होगा। नवीन भारत के निर्माण के लिए कृषकों की आय दुगुनी करने का लक्ष्य हमारे सामने है। भारत गांव में बसता है और गांवों के उत्थान से ही देश का उन्नयन होगा। हमारे राज्य में वैश्विक जलवायु परिवर्तन, अतिवृष्टि, ओलावृष्टि, पाला, न्यून वर्षा जैसी आपदाओं की चुनौतियां बनी रहती हैं। किसान और पशुपालकों को तमाम ऐसी परेशानियों के बीच आगे बढ़ने के रास्ते पर चलना होगा। जलवायु परिवर्तन के इस दौर में सस्ती व टिकाऊ खेती और पशुपालन की परंपरागत विधियों की ओर लौटना होगा। उनके साथ नवीन प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक तौर–तरीकों का समावेश करके हम लागत कम करके मुनाफा ले पायेंगे। राज्य सरकार ने ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट (ग्राम) का आयोजन कर पशुपालन और कृषि में त्वरित और स्थाई विकास के जरिए आर्थिक सशक्तिकरण सुनिश्चित किया है। जयपुर में राज्यस्तरीय और कोटा व उदयपुर में संभाग स्तरीय आयोजन के बाद अन्य सभी संभागीय मुख्यालयों पर होने वाले ग्राम के आयोजन से पशुपालक और कृषकों की व्यावसायिक कुशलता में अभिवृद्धि सुनिश्चित हुई है। किसानों को उत्पादन बढ़ाने की नई तकनीक के साथ–साथ अपने उत्पादन के उचित मूल्य के लिए भी प्रयत्नशील रहना होगा। यदि हम उत्पादन का मूल्य संवर्द्धन कर बाजार में विक्रय करें तो मुनाफे में वृद्धि हो सकती है। खेती के साथ–साथ आय बढ़ाने के लिए पशुपालन, मुर्गीपालन, मधुमक्खी पालन जैसे जैव विविधिकरण उपायों को भी अपनाना समय की मांग है। कृषि लागत में कमी, पशुधन उत्पादकता में वृद्धि कर ग्रामीण आधारित कृषि पशुपालन प्रसंस्करण और मूल्य संवर्द्धन करके किसान की आय बढ़ाने के प्रयास होने चाहिए। खाद्य सुरक्षा के आगे किसान को आय सुरक्षा प्रदान करने के लिए भी हमें सचेष्ट रहना होगा।

जयहिन्द!

(प्रो. बी. आर. छीपा)

बीकानेर सुराज प्रदर्शनी मे जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री श्री रामप्रताप, केन्द्रीय जल संसाधन एवं संसदीय कार्य राज्यमंत्री श्री अर्जुनराम मेघवाल, महापौर श्री नारायण चौपड़ा एवं संसदीय सचिव डॉ. विश्वनाथ मेघवाल द्वारा राजुवास प्रदर्शनी का अवलोकन

मुख्य समाचार

जैविक पशुपालन तकनीक व उत्पादों के प्रमाणीकरण पर राज्य के पशुपालकों का दो दिवसीय प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय में राज्य के 10 जिलों से आए कृषक–पशुपालकों का दैनिक पशुपालन तकनीकों, जैविक पशु उत्पादों का प्रमाणीकरण और उनके महत्व पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 6 दिसम्बर को सम्पन्न हो गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय और कट्स संस्था के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित प्रशिक्षण शिविर के समापन सत्र के मुख्य अतिथि राजुवास के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.पी. सिंह ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण–पत्र प्रदान किए। इस अवसर पर प्रो. सिंह ने कहा कि बीमार पशुओं को उचित मात्रा में ही दवाईया देनी चाहिए। कम और ज्यादा दवा देना नुकसान दायक हो सकता है। इससे पशु की प्रतिरोधक क्षमत्ता कम हो सकती है। समारोह की अध्यक्षता करते हुए राजुवास के कुलसचिव प्रो. हेमंत दाधीच ने प्रशिक्षण में प्राप्त जानकारी पर पूरी तरह अमल करने का आह्वान किया। प्रशिक्षण के संयोजक व केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक डॉ. विजय कुमार बिश्नोई ने बताया कि दो दिवसीय प्रशिक्षण में 104 पशुपालकों के लिए 10 विशेषज्ञ वार्ताकारों का संवाद हुआ। प्रशिक्षार्थियों को राजुवास डेयरी और पोल्ट्री फॉर्म का भ्रमण करवा कर जानकारी दी।

राष्ट्रीय भेड़ व ऊन मेले में प्रदर्शनी को मिला द्वितीय पुरस्कार

अविकानगर (टौंक) में 8 दिसम्बर को आयोजित राष्ट्रीय भेड़ एवं ऊन मेले में वेटरनरी विश्वविद्यालय की प्रदर्शनी स्टॉल को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया है। एक दिवसीय राष्ट्रीय मेले में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के संस्थानों/केन्द्रों और राज्य सरकार के विभिन्न विभागों द्वारा प्रदर्शनी में 35 प्रदर्शनी स्टॉल लगाए गए थे। वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.पी. सिंह ने यह पुरस्कार मेले के समापन पर प्राप्त किया। उन्होंने बताया कि राजुवास की प्रदर्शनी में पशुपालन की नवीन उन्नत तकनीकों, स्वदेशी गोवंश की विभिन्न नस्लों, उनकी उत्पादकता, पशुपोषण व पशुचिकित्सा की तकनीकों को मॉडल, रंगीन चार्ट और रंगीन फोटोग्राफ्स के माध्यम से प्रदर्शित कर किसानों और पशुपालकों को जानकारी दी गई। प्रदर्शनी स्टॉल को केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, क्षेत्रीय सांसद सुखवीर सिंह जौनपुरिया, टौंक के जिला प्रमुख सत्यनारायण चौधरी, विधायक कन्हैयालाल चौधरी ने अवलोकन कर सराहा। अतिथियों ने इस अवसर पर प्रसार शिक्षा निदेशलय द्वारा प्रकाशित पशु पालन नए आयाम के नवीनतम अंक का विमोचन किया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उपमहानिदेशक (पशुविज्ञान) डॉ. जयकृष्ण जैना, सहा. महानिदेशक डॉ. आर. एस. गांधी, डॉ. एम.एस. चौहान, डॉ. एन.वी. पाटिल और डॉ. अरूण कुमार ने भी प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

भारतीय मानक ब्यूरो की एक दिवसीय कार्यशाला सम्पन्न

भारतीय मानक ब्यूरो नई दिल्ली एच.एम.डी.–13 सेक्शनल कमेटी द्वारा पशुचिकित्सा अस्पतालों के मानकीकरण पर एक दिवसीय कार्यशाला 15 दिसम्बर को वेटरनरी विश्वविद्यालय में आयोजित की गई। कार्यशाला में पशु चिकित्सालयों की योजना और शल्य चिकित्सा में उपयुक्त उपकरणों के मानकीकरण बाबत 50 विशेषज्ञों ने इसमें भाग लिया। वेटरनरी ऑडिटोरियम में कार्यशाला के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि बीकानेर के महापौर श्री नारायण चौपड़ा ने कहा कि आजादी के बाद से कई क्षेत्रों में गुणवत्ता की गारंटी के लिए मानकीकरण का कार्य होना है। समारोह की अध्यक्षता करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा ने कहा कि भारतीय मानक ब्यूरो और आई.एस.आई. मार्क उत्पाद लोगों के विश्वास और संतुष्टि के साथ ही गुणवत्ता युक्त उत्पाद की पहचान है। भारतीय मानक ब्यूरो एम.एच. डी.–13 के अध्यक्ष डॉ एम.सी. शर्मा ने कहा कि देश दुधारू पालतू पशुओं के उत्पादों में अव्वल है। दूध, ऊन, मीट और अंडे जैसे उत्पादों का अन्तर्राष्ट्रीय बाजार उपलब्ध है लेकिन हम इनका निर्यात नहीं कर पाए हैं। पशु चिकित्सालयों और प्रयोग में लाए जा रहे उपकरणों में मानकीकरण का अभाव इसका प्रमुख कारण है। राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र हिसार के निदेशक डॉ. बी.एन. त्रिपाठी, राष्ट्रीय उष्ट्र उनुसंधान केन्द्र के निदेशक डॉ. एन.वी. पाटिल ने वैश्विक स्पर्द्धा और गुणवत्तापूर्ण उत्पादों के लिए मानकीकरण को अत्यंत आवश्यक बताया। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा ने भारतीय मानक ब्यूरो की वेटरनरी विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यशाला को ऐतिहासिक बताते हुए राजुवास के पूर्ण सहयोग का विश्वास दिलाया। प्रारम्भ में कार्यशाला के संयोजक और राजुवास के निदेशक क्लिनिक्स प्रो. जे.एस. मेहता ने बताया कि कार्यशाला के दो तकनीकी सत्र में विचार–विमर्श किया गया जो आने वाले समय में देश को और भी विकास की तरफ ले जाएगा। अंत में ब्यूरो के प्रमुख वैज्ञानिक के. राजा ने सभी का आभार व्यक्त किया।

सादुलशहर की 34 कृषक महिलाओं द्वारा राजुवास का भ्रमण

उपनिदेशक कृषि एवं परियोजना निदेशक आत्मा श्री गंगानगर के सौजन्य से अन्तर राज्य कृषक भ्रमण कार्यक्रम के तहत सादुलशहर पंचायत समिति ब्लॉक के 34 कृषक महिलाओं का एक दल 15 दिसम्बर को वेटरनरी विश्वविद्यालय पहुँचा। वेटरनरी प्रसार शिक्षा के सहायक प्राध्यापक डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा ने उन्हें डेयरी, पोल्ट्री फॉर्म का भ्रमण करवा कर पशु–पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों के रखरखाव, पोषण, चिकित्सा और उपचार सेवाओं की जानकारी दी। कृषकों को भैंस की देशी नस्ल मुर्रा, मुर्गियों और बतखों की विभिन्न प्रजातियों के पालन और उनसे व्यावसायिक उत्पादन लिए जाने के बारे में विस्तार से बताया।

सुराज प्रदर्शनी बीकानेर में राजुवास की प्रदर्शनी स्टॉल में हजारों दर्शकों ने देखी और समझी पशुपालन की तकनीकें

राजस्थान सरकार के 4 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 17–19 दिसम्बर को फोर्ट स्कूल मैदान में आयोजित सुराज प्रदर्शनी में वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रदर्शनी स्टॉल में हजारों लोगों ने स्वदेशी गौवंश की विभिन्न नस्लों, पशुपालन की विभिन्न तकनीकों एवं वैज्ञानिक पशुपालन के तौर– तरीकों को देखा और समझा। समारोह के मुख्य अतिथि जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री डॉ. रामप्रताप ने राजुवास द्वारा तैयार चारे की ईंट, चारा कुट्टी मशीन और यूरियां मोलासिस मिनरल ब्लॉक की भी जानकारी ली। उन्होंने स्वदेशी गोवंश के स्वास्थ्यवर्धक एवं पौष्टिक ए –2 दूध के महत्व और सर्वाधिक मांग की पूर्ति के लिए राजुवास के वैज्ञानिक प्रयासों की सराहना की। केन्द्रीय जल संसाधन राज्य मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल, संसदीय सचिव डॉ. विश्वनाथ मेघवाल सहित अनेक जनप्रतिनिधियों एवं आमजन ने भी पशुपालन की वैज्ञानिक तकनीकों और गोवशं सवर्द्धन उपायों का अवलोकन किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.पी. सिंह ने उन्हें जानकारी दी।

सुराज प्रदर्शनी में राजुवास रहा प्रथम

राजस्थान सरकार के 4 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में फोर्ट स्कूल मैदान में आयोजित सुराज प्रदर्शनी में वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रदर्शनी स्टॉल को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया है। तीन दिवसीय प्रदर्शनी का 19 दिसम्बर को समापन समारोह में अतिरिक्त जिला कलक्टर श्री यशवंत भाकर और अतिरिक्त जिला कलक्टर (नगर) श्री शैलेन्द्र देवड़ा ने राजुवास के निदेशालय प्रसार शिक्षा के सहायक आचार्य डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा को यह पुरस्कार प्रदान किया। राजुवास के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.पी. सिंह ने बताया कि सुराज प्रदर्शनी में वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रदर्शनी स्टॉल में हजारों लोगों ने स्वदेशी गौवंश की विभिन्न नस्लों, पशुपालन की विभिन्न तकनीकों एवं वैज्ञानिक पशुपालन के तौर–तरीकों को देखा और समझा।

पशुपालकों की आय बढ़ाने के लिए लूनकरणसर के 58 कृषकों का एक दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न

पशुपालकों और कृषकों की आय बढ़ाने के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय में 58 कृषकों का "पशु विविधिकरण सजीव मॉडल" (आरकेवीवाई–15) का एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 19 दिसम्बर को संपन्न हो गया। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा ने समापन समारोह में कृषकों को पशु विविधिकरण से आय बढ़ाने के विभिन्न तौर–तरीकों की जानकारी दी। अधिष्ठाता प्रो. शर्मा और राजुवास के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.पी. सिंह ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए। प्रमुख अन्वेषक प्रो. बसन्त बैस ने बताया कि प्रशिक्षण में लूनकरणसर ब्लॉक के सुरनाणा गांव के कृषकों ने पशु विविधिकरण के सजीव मॉडल को देखकर पूरी जानकारी प्राप्त की।

संभाग के 62 डेयरी प्रबंधकों का आवासीय प्रशिक्षण सम्पन्न

संभाग के डेयरी प्रबंधकों/संचालकों का तीन दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण 22 दिसम्बर को वेटरनरी विश्वविद्यालय में सम्पन्न हो गया। राज्य के गोपालन विभाग और राजुवास के प्रसार शिक्षा निदेशालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित प्रशिक्षण में बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर जिलों के 62 डेयरी प्रबंधक/संचालक शामिल हुए। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता एवं संकायाध्यक्ष प्रो. त्रिभुवन शर्मा ने प्रशिक्षण का उद्घाटन किया। राजुवास के पशुधन उत्पादन प्रबंधन विभाग के सभागार में समापन समारोह में वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. हेमन्त दाधीच ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए। प्रशिक्षण के संयोजक और राजुवास के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.पी. सिंह ने बताया कि किसान और पशुपालकों की आय बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जाता है। गोपालन विभाग, जयपुर के संयुक्त निदेशक डॉ. जे.पी. अटल ने कहा कि डेयरी में उत्पादन के लिए अच्छी नस्ल के पशु और प्रजनन आवश्यक है। बायो वेस्ट से ऊर्जा उत्पादन के लिए भी डेयरी संचालकों को उपाय करने चाहिए। प्रशिक्षण में संभागियों को उरमूल डेयरी संयंत्र और पशुधन अनुसंधान केन्द्र, कोडमदेसर का भ्रमण करवा कर

कांकरेज व साहीवाल गोवंश के रखरखाव व उरमूल डेयरी में दूध का संरक्षण और मूल्य संवर्द्धन और विपणन कार्यों की जानकारी दी गई। डॉ. रमेश दाधीच ने राज्य पशुपालन विभाग की योजनाओं की जानकारी दी।

जयपुर के कृषकों ने पशुपालन की तकनीकें देखी और समझी

उपनिदेशक कृषि एवं परियोजना निदेशक आत्मा परियोजना जयपुर के 50 कृषकों के एक दल ने 27 दिसम्बर को वेटरनरी विश्वविद्यालय का भ्रमण कर पशुपालन की नवीनतम तकनीकों की जानकारी ली। पशुपालकों को पशु मादा और प्रसूति विभाग में डॉ. अशोक खींचड़ ने पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान और वीर्य संग्रहण के तौर–तरीकों से अवगत करवाया। डॉ. संजय महला ने पोल्ट्री फॉर्म में मुर्गी, बतख, जापानी बटेर पालन और उनके व्यावसायिक महत्व की जानकारी दी। प्रसार शिक्षा के सहायक आचार्य डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने कृषकों को राजुवास तकनीकी म्यूजियम में पशुपालन तकनीकों की प्रदर्शित चार्ट, मॉडल और छाया चित्रों से जानकारी दी।

प्रशिक्षण समाचार

वी.यू.टी.आर.सी., चूरू द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 8, 11, 12, 13, 16, 22 एवं 23 दिसम्बर को गांव पहाड़सर, देपालसर, बालेरा, लासेड़ी, अलायला, नैणांसर एवं फोगा भरतरी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 270 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र द्वारा 221 पशुपालक प्रशिक्षित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 6, 7, 16, 20, 23 एवं 29 दिसम्बर को मोहनपुरा, मदेरा, संद्दर, अनुपगढ़, अमरपुरा जाटान एवं सार्दुलशहर गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 59 महिला पशुपालकों सहित कुल 221 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 6, 7, 12, 15, 18, 20 एवं 21 दिसम्बर को गांव पोसालिया, छीबागांव, मेर मण्डवाड़ा, मोहब्बतनगर, वासा, नितौडा एवं भटाणा गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 169 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा 9 प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 11, 12, 13, 14, 15, 16, 18 एवं 19 दिसम्बर को गांव मंगलपुरा, दुजार, बाकलिया, श्यामपुरा, बालसंबध, गुणपालिया, गौरेड़ी एवं खानपुर गांवों में तथा

22 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 58 महिला पशुपालकों सहित 211 पशुपालकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा 310 पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 5, 6, 8, 12, 14, 18, 19, 21, 22 एवं 26 दिसम्बर को गांव गोरधनपुरा, भरांई, बरोल, सथाना, देवलियाकला, गोविन्दगढ़, भांवता, गनाहेडा, कडेल एवं हाथीखेड़ा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 310 पशुपालकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., डूंगरपुर द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 5, 6, 8, 11, 13, 15, 16 एवं 18 दिसम्बर को गांव खेड़ा, पगारा, सिदडी, सिदडी खेरवाड़ा, खेड़ा कछवासा, दामड़ी, मोवाई एवं दोवड़ा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 291 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा 351 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 4, 5, 7, 8, 11, 12, 13, 16, 20, 21 एवं 23 दिसम्बर .को गांव नगना मैथना, झारला, अगावली, बाजौली, बांसी, लुहासा, कनावर, हरनगर, भगौरी एवं लखनपुर गांवों में एवं दिनांक 14 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 109 महिला पशुपालकों सहित कुल 351 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 13, 15, 16, 18, 19, 20, 22, 26, 27, एवं 28 दिसम्बर को गांव मीरनगर, सांखना, सरोली, ठिकरिया कलां, सोरण, देवली भांची, लहन, खानपुरा, कारोला एवं चिरोंज गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 263 पशुपालकों एंव कृषकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 5, 8, 15, 18, 22 एवं 27 दिसम्बर को गांव असरासर, गुसाईणा, सुई, शेरपुरा, रतनीसर एवं घेसुरा गांवो में तथा दिनांक 13 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 237 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 11, 13, 16, 21, 22, 26, 28 एवं 29 दिसम्बर को गांव बमौरी, धनवा, बालूहेड़ा, किशनगंज, चर्न्देशल, मौराना, बिशनपुरा एवं नयापुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 259 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 7, 8, 16, 18, एवं 22 दिसम्बर को गांव आजमपुरा, केलजर, सरथल, विजयपुरा एवं ब्यावर गांवो में तथा दिनांक 12, 19, 23 एवं 26 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 238 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., धौलपुर द्वारा 302 पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 6, 7, 11, 13, 14, 23, 26 एवं 27 दिसम्बर को गांव कलियानपुर, विपरपुर, बरेलपुरा, शाहपुरा, बद्रिका, कटकी, कोडपुरा एवं खेरा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 302 पशुपालकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा गोष्ठी व प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा 11, 15, 16, 18, 22 एवं 26 दिसम्बर को गांव खुईयां, ढाणी राईका, चक–डेइडासपुरा, किकराली, सरदार गड़िया, एवं तेलियो की ढाणी गांवों में एक दिवसीय तथा 19–20 एवं 27–28 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित दो दिवसीय कृषक–पशुपालक प्रशिक्षण शिविरो में 251 कृषक–पशुपालकों ने भाग लिया।

भैंसों में न्यूमोनिक पाश्च्युरेल्लोसिस रोग

यह रोग सभी प्रजाति एवं सभी उम्र के पशुओं में फैलता है लेकिन मुख्यतः भैंस इस रोग से ज्यादा प्रभावित होती है। यह रोग सर्दियों में अधिक होता है। पिछले दिसम्बर माह से ही यह रोग भैसों को प्रभावित कर रहा है और कई जिलों में पशुधन हानि हुई है। पशुपालक इस रोग की पहचान रोग के लक्षणों के आधार पर आसानी से कर सकते हैं। शुरूआत में पशु उदास एवं सुस्त हो जाता है, पशु को तेज बुखार आता है, चारा–पानी कम अथवा बंद कर देता है, नथूनें सूख जाते हैं एवं पशु को पेट दर्द व कब्ज की शिकायत भी होती है। अंत में पशु के शरीर का तापमान सामान्य से भी कम हो जाता है तथा इस अवस्था में पशु का इलाज मुश्किल होता है और अंत में पशु की मृत्यु हो जाती है।

बचाव कैसे करें –

1. बीमार पशु को पहचान कर उसे स्वस्थ पशुओं से तुरंत अलग करें।
2. बीमार पशुओं का आवागमन बंद कर देना चाहिये एवं अन्य स्वस्थ पशुओं के संपर्क में नहीं आने देना चाहिये।
3. बीमार पशु का चारा–पानी, रहन–सहन तथा पूरा प्रबंधन अलग कर देना चाहिये क्योंकि यह एक पशु से दूसरे पशुओं में फैलने वाली बीमारी है।
4. बीमार पशु का मल–मूत्र भी तुरंत हटा देना चाहिये क्योंकि यह संक्रमण का एक प्रमुख स्त्रोत है।
5. मृत पशु को बाड़े से दूर गहरे खड्डे में दबाना चाहिये तथा दबाने से पहले पशु को चूने अथवा नमक से ढक देना चाहिये।
6. मृत पशु को पोस्टमार्टम के उद्देश्य से अन्य स्वस्थ पशुओं के पास नहीं खोलना चाहिये क्योंकि इस रोग के जीवाणुओं से वातावरण एवं चारा–पानी संक्रमित हो सकते हैं।
7. इस रोग से बचाव का सबसे अच्छा उपाय इस रोग को फैलने से बचाना तथा सभी महत्वपूर्ण सावधानियां हमेशा ध्यान में रखना एवं उनका पालन करना है।
8. किसी भी पशु में बीमारी के लक्षण प्रकट होने पर निकटतम पशु चिकित्सक से तुरंत सम्पर्क करें। इलाज में देरी होने पर पशु की बीमारी बहुत तेजी से बढ़ सकती है।
9. प्रारंभिक अवस्था में रोग की पहचान कर ली जाये तो इस बीमारी का पूरा इलाज संभव है। पशुपालक को इलाज के लिए पशु चिकित्सक से तुरंत संपर्क करना चाहिए।

– प्रो. ए.के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

भारतीय नस्ल की देशी गायों के ए–2 दूध का महत्व

भारतीय संस्कृति में गाय को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। इसे कामधेनु भी कहा गया है। इसका दूध बच्चों के लिए न केवल पौष्टिक माना गया है अपितु इसे बुद्धि के विकास में कारगर भी पाया गया है। सभी पशुओं में गाय के दूध को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। भारत में देशी नस्ल की गाय पालने की परंपरा रही है तथा इसका दूध स्वास्थ्य हेतु बेहतर पाया गया है। देशी गायों के दूध में पाया जाने वाला एक विशेष प्रोटीन हृदय की बीमारी एवं मधुमेह से लड़ने में कारगर पाया गया है तथा यह प्रोटीन बच्चों के मानसिक विकास में भी सहायक होता है। शायद इसलिए ही गाय के दूध की तुलना मां के दूध से की गई है। भारतीय गायों की एक ऐसी विशेषता है जो दुनिया की अन्य गौ–प्रजातियों में नहीं होती। भारतीय नस्ल की गायों का दूध अत्यंत गुणकारी है। साधारणतया दूध में 85 प्रतिशत जल होता है और शेष भाग में ठोस तत्व अर्थात लैक्टोज़, प्रोटीन, खनिज व वसा जैसे तत्त्व होते हैं। दूध, प्रोटीन, कैल्शियम, राइबोफ्लेविन तथा विटामिन बी$_2$–युक्त होता है। इसके अतिरिक्त इसमें विटामिन ए, डी, के और ईसहित फॉस्फोरस, मैग्निशियम, आयोडीन जैसे कई अन्य खनिज पदार्थ पाए जाते हैं। गाय के ताजे दूध में कई एंजाइम तथा कुछ जीवित कायिक कोशिकाएं भी होती हैं। गाय के दूध में पाए गए प्रोटीन में लगभग एक तिहाई 'बीटा केसीन' नामक प्रोटीन होता है। विभिन्न प्रकार की गायों में आनुवांशिकता (जैनेटिक कोड) के आधार पर 'केसीन प्रोटीन' अलग–अलग प्रकार का हो सकता है। यह दूध की संगठनात्मक रचना को प्रभावित करता है जिससे इसमें गुणात्मक परिवर्तन होते हैं। दूध की गुणवत्ता के आधार पर ही उपभोक्ता इसे स्वीकार या अस्वीकार करते हैं। विदेशी गोवंश की अधिकांश गायों के दूध में 'बीटा केसीन ए–1' नामक प्रोटीन पाया गया है। जब इस दूध को पीते हैं तो इसमें शरीर के पाचक रस मिल जाते हैं तथा पाचन क्रिया में इस दूध के ए–1 बीटा केसीन नाक प्रोटीन की 67वीं कड़ी टूट कर अलग हो जाती है और 'हिस्टिडीन' के कारण 'बी.सी.एम.7' (बीटा कैसो–मोर्फिन–7) का निर्माण होता है। सात अमीनो–अम्ल वाला यह प्रोटीन ही विभिन्न रोगों हेतु उत्तरदायी माना गया है। यह शरीर के सुरक्षा तंत्र को नष्ट करके अनेक असाध्य रोगों का कारण बनता है।

बीटा केसीन ए–1 तथा ए–2 में अन्तर

लगभग 12 प्रकार के बीटा केसीन ज्ञात हुए हैं जिनमें ए–1 तथा ए–2 बीटा केसीन प्रमुख हैं। ए–2 की एमिनो एसिड़ श्रृंखला (कड़ी) में 67वें स्थान पर 'प्रोलीन' होता है। जबकि ए–1 बीटा केसीन में 'प्रोलीन' के स्थान पर 'हिस्टिडीन' नामक अमीनो–अम्ल होता है। ए–1 बीटा केसीन में यह कड़ी कमजोर होती है जो पाचन क्रिया के दौरान टूट जाती है और 'बीटा कैसोमोर्फिन–7' का निर्माण होता है।

देशी गायों में मिलता है ए–2 बीटा केसीन

अनुसंधान में पाया है कि देशी गाय से मिलने वाले दूध में ए–2 बीटा केसीन नाम का प्रोटीन होता है। यह शरीर के लिए काफी फायदेमंद होता है जबकि संकर व अन्य विदेशी गायों के दूध में ए–1 बीटा केसीन पाया जाता है।

ए–2 दूध से लाभ

यह प्रोटीन केवल देशी गायों के दूध में ही पाया जाता है। ए–2 बीटा केसीन नामक प्रोटीन न केवल शरीर की रोग प्रतिरोध क्षमता को बढ़ाता है बल्कि दिल की बीमारी के खतरे को भी कम करता है। ए–2 बीटा केसीन कैंसर रोग के खतरे को कम करता है। यह पाचन तंत्र के लिए बहुत लाभदायक है। न्यूजीलैंड के वैज्ञानिक केथ वुडफोर्ड ने अपनी किताब 'डेविल इन द मिल्क' में लिखा है कि भारत की देशी नस्ल की गायों में ए–2 बीटा केसीन प्रोटीन होता है, जो मनुष्य के शरीर हेतु निरोगी एवं लाभदायक होता

है। वहीं विदेशी नस्ल की गायों में ए–1 बीटा कैसिन पाया जाता है, जिसमें विभिन्न रोगों से लड़ने की क्षमता बहुत कम होती है। कई ऐसे शोध हुए हैं जिनमें विदेशी गायों में मौजूद ए–1 प्रोटीन से मानव शरीर में डायबिटीज, ब्लड प्रेशर आदि बीमारियों के होने सम्बन्धी तथ्य सामने आए हैं। देशी गायों का दूध बच्चों के मानसिक विकास में काफी सहायक है। बच्चों को यह दूध आसानी से पच जाता है। हमारे देश में पाई जाने वाली विदेशी और संकर गाय दूध की उत्पादकता तो बढ़ाती हैं लेकिन अच्छी गुणवत्ता केवल देशी गायों के दूध में ही होती है। करनाल स्थित आनुवंशिकी ब्यूरो के द्वारा किए गए शोध के अनुसार भारत की 98 प्रतिशत नस्लें ए–2 प्रकार के दुग्ध–प्रोटीन वाली होती हैं। इनके दुग्ध–प्रोटीन की अमीनो एसिड़ श्रृंखला में 'प्रोलीन' अम्ल 67वें स्थान पर होता है और यह अपने साथ ही 66वीं कड़ी के साथ मजबूती से जुड़ा रहता है तथा यह पाचन के समय टूटती नहीं है। 66वीं कड़ी में अमीनो एसिड 'आइसोल्यूसीन' होता है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि भारत की 2 प्रतिशत नस्लों में ए–1 नामक एलील विदेशी गोवंश के साथ हुए 'म्यूटेशन के कारण' ही आया होगा। आनुवांशिकी ब्यूरो (एन.बी.ए.जी. आर/करनाल) द्वारा भारत की 25 नस्लों की गायों के 900 सैम्पल लिए गए थे। जिनमें से 97–98 प्रतिशत ए–2 ए–2 पाए गए तथा एक भी ए–1 ए–1 नहीं निकला। कुछ सैंम्पल ए–1 ए–2 थे जिसका कारण विदेशी गोवंश से सम्पर्क होना बताया गया। भैंसों की शतप्रतिशत नस्लें केवल ए–2 बीटा केसीनयुक्त दूध ही उत्पादित करती है। आजकल बहुत–से उपभोक्ता जागरूक हो रहे हैं कि बाल्यावस्था में बच्चों को केवल ए–2 दूध ही देना चाहिये। विश्व बाजार में न्यूजीलेंड, ऑस्ट्रेलिया, कोरिया, जापान और अमेरिका में प्रमाणित ए–2 दूध के दाम साधारण ए–1 दूध के दाम से कही अधिक हैं। ए–2 प्रोटीनयुक्त दूध देने वाली सर्वाधिक गाय भारतवर्ष में पाई जाती हैं। यदि हमारी देशी गोपालन की नीतियों को समाज और शासन का प्रोत्साहन मिलता है तो सम्पूर्ण विश्व के लिए ए–2 दूध आधारित बाल–आहार का निर्यात भारत से किया जा सकेगा। यह एक बड़े आर्थिक महत्व का विषय है। आज देशी गाय को देश के आर्थिक और सामाजिक स्वास्थ्य में वृद्धि करने हेतु एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में देखा जाने लगा है। इससे न केवल देशी गायों के पालन पोषण को बढ़ावा मिलेगा अपितु भविष्य में चयनित प्रजनन द्वारा इनकी उत्पादकता में भी आशातीत वृद्धि हो सकेगी।

–प्रो. (डॉ.) बसंत बैस
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर (मो.9413311741)

अपने विश्वविद्यालय को जानें

पशु विविधिकरण सजीव मॉडल

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत पशु विविधिकरण सजीव मॉडल राजुवास में विकसित किया गया है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य पशुपालकों का रुझान लाभकारी पशु–पक्षी प्रजातियों के पालन की तरफ खींचना है जिससे उनकी आय में वृद्धि हो सके। मुर्गी पालन व्यवसाय अण्डा एवं मीट दोनों के ही उत्पादन के लिए किया जाता है। मीट उत्पादन के लिए चूजे 40–45 दिनों में तैयार हो जाते हैं जबकि अण्डा उत्पादन के लिए तैयार होने में मुर्गियों को साढ़े पांच महीने तक लग जाते हैं। पशु विविधिकरण सजीव मॉडल में देसी नस्ल की विभिन्न प्रजातियों के समूह है जैसे कड़कनाथ, नस्ल देसी प्रजाति असील, विदेशी नस्ल की प्लेमौथरोक, रॉड आइलैंड एवं मेडिटिरेनियन क्लास की व्हाइट लेगहॉर्न हैं। मुर्गीपालन के साथ ही जापानी नस्ल की बटेर का पालन कुक्कुट विविधिकरण का एक अच्छा विकल्प है। बिना चर्बी मांस के लिए टर्की पालन मुर्गी पालन का एक अच्छा विकल्प है। वर्तमान समय में विश्व के कई हिस्सों में गिनी फाउल को मुख्यतया मांस व अण्डे उत्पादन के लिए पाला जाता है। पशु विविधिकरण सजीव मॉडल में गिनी फाउल उपलब्ध है। सौंदर्य की दृष्टि से अति सुन्दर बतख भारत में मुर्गी पालन के बाद अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। पशु विविधिकरण सजीव मॉडल में बतख की तीन नस्लें व्हाइट पैकिन,खाकी कैम्पवेल, मल्लार्ड उपलब्ध है। शुतुरमुर्ग के बाद विश्व का दूसरा सबसे बड़ा पक्षी एमू है जो यहां देखा जा सकता है। विविधिकृत पशुपालन में खरगोश पालन एक लाभदायक व्यवसाय है। मरू प्रदेश में रेगिस्तान का जहाज कहलाने वाले ऊँट को राज्य पशु का दर्जा प्राप्त है। ऊंटनी का दूध औषधीय गुणों से युक्त और पौष्टिक तत्वों से भरपूर है। राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविधालय के वैज्ञानिको ने देशी नस्ल की मुर्गी कडकनाथ व दो विदेशी नस्ल के कुक्कुट ऑस्ट्रोलोर्प और रोड आइलैण्ड रैड के संयोग से ब्रायलर की एक नयी किस्म (राजुवास ब्रायलर स्ट्रेन) विकसित की है। विविध पशुधन एवं कुक्कुट प्रजातियों की उपयोगिता को देखते हुए तथा पशुपालकों की आय एवं जीविका में बढ़ोतरी के लिए विश्वविद्यालय ने पशु विविधिकरण सजीव मॉडल की स्थापना की है।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–जनवरी, 2018

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	जयपुर, धौलपुर, बीकानेर
एम्फीस्टोमियेसिस	गाय, भैंस	भरतपुर, उदयपुर, कोटा, धौलपुर
फेसियोलियेसिस (यकृत कृमि)	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	भरतपुर, कोटा, धौलपुर, डूँगरपुर, हनुमानगढ़, सवाई–माधोपुर, सीकर, बूंदी
गलघोंटू	गाय, भैंस	जयपुर, चित्तौड़गढ़, पाली, टौंक, भरतपुर, उदयपुर, अलवर, भीलवाड़ा, दौसा
लंगड़ा बुखार	गाय, भैंस	श्रीगंगानगर, भरतपुर, हनुमानगढ़, अलवर
मुँहपका–खुरपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	दौसा, जयपुर, अनूपगढ़, धौलपुर, बीकानेर, अलवर, अजमेर, सवाईमाधोपुर
बबेसियोसिस (खून मूतना)	गाय, भैंस	धौलपुर, बून्दी, डूँगरपुर, बीकानेर
माता रोग (चेचक)	भेड़,ऊँट	बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ, जैसलमेर, पाली, सिरोही, सीकर
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	नागौर, जोधपुर, बीकानेर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, श्रीगंगानगर, चूरू, सीकर, उदयपुर, पाली, सिरोही
एनाप्लाज्मोसिस	गाय	भरतपुर, सीकर, जयपुर
न्यूमोनिक पास्चुरेल्लोसिस	गाय, भैंस	सीकर, नागौर, अलवर, झुंझुनु, सवाई माधोपुर
जोहनीस रोग	भेड़, गाय	बीकानेर, जैसलमेर, श्रीगंगानगर
सी.सी.पी.पी. (एक प्रकार का न्यूमोनिया)	भेड़, बकरी	बीकानेर, जैसलमेर, श्रीगंगानगर, धौलपुर, जोधपुर, अजमेर
रानीखेत रोग	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
इन्फेक्सीयस ब्रोंकाइटिस	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपदकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर। फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

अपने स्वदेशी अश्व वंश को पहचानें > काठियावाड़ी अश्व : गौरव प्रदेश का

काठियावाड़ी नस्ल के अश्व मुख्य रूप से गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र में पाये जाते हैं। इसके अलावा राजस्थान, मध्यप्रदेश, पंजाब व हरियाणा प्रदेश में भी यह नस्ल पायी जाती है। इन्हें खेलों तथा धार्मिक अनुष्ठानों तथा घुड़सवारी में काम लिया जाता है। यह नस्ल अपनी सहनशीलता, मजबूत कदकाठी व रफ्तार के लिए प्रसिद्ध है। इस नस्ल का नाम गुजरात के काठियावाड़ क्षेत्र के नाम के कारण पड़ा है। इसके शरीर का रंग मुख्यतया लाल–भूरे रंग का होता है इसके साथ मुंह तथा पैरों पर धारियां व स्टार्स होते हैं। इसका ललाट चौड़ा तथा आंखों के ऊपर ऊभरा होता है। इसका चेहरा अवतल व छोटे अंदर की तरफ मुड़े कान होते हैं जिसके टिप्स मिले होते हैं। इसकी गर्दन व पूंछ पर लम्बे व घुंघराले बाल होते हैं। पीठ पर भूरे रंग की पट्टियां इसकी नस्ल की मुख्य पहचान है। जन्म के समय इसके बच्चे का शारीरिक भार 31 किलो ग्राम होता है तथा वयस्क नर व मादा का भार क्रमशः 337 व 321 किलो होता है। वयस्क नर व मादा की ऊंचाई क्रमशः 150.9 तथा 148 से. मी. होती है। घोड़ों को बहुत ध्यान से प्रशिक्षित करके रखा जाता है। इस नस्ल की चाल ''टिवाल'' होती है। बीकानेर में ''राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र'' स्थित है जिनका मुख्य कार्यालय हिसार में स्थित हैं।

सफलता की कहानी

बेअंत सिंह ने बकरी पालन से बनाया अपना मुकाम

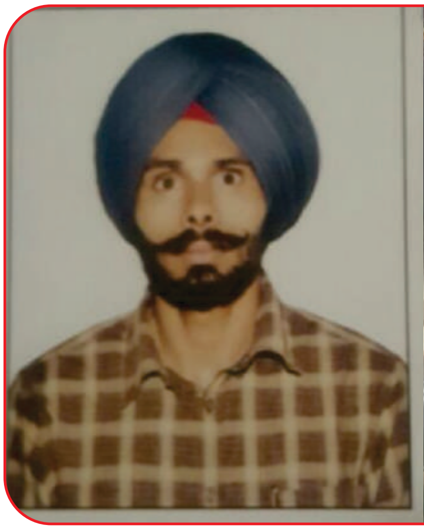

बकरी पालन व्यवसाय के माध्यम से गरीब किसान अपनी किस्मत सुधार कर उसे चमका भी सकते हैं। इस सफलता की कहानी का एक उदाहरण पंजाब से आए एक किसान बेअन्त सिंह का है। उन्होंने पंजाब मे कम जमीन होने से राजस्थान के सूरतगढ़ तहसील के गांव 15 एसजीआर में 20 बीघा खेती की जमीन लेकर वहीं रहना शुरु कर दिया। आस–पास रेतीली जमीन होने व रोजगार का साधन न होने के कारण उन्होंने बकरी पालन करने की सोची। 25 नवम्बर 2016 को राजस्थान पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ के सम्पर्क में आकर उन्होंने बकरी पालन शुरु कर दिया। इसकी शुरुआत 30 बकरी और 2 बकरों से की। फरवरी 2017 में पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ से प्रशिक्षण लेकर एक शेड का निर्माण किया और बकरियों को अधिक प्रोटीन देने के लिए दो अजोला यूनिट भी लगवा दी जिससे आर्थिक लाभ मिला और बकरियों की सेहत भी अच्छी रहने लगी। उन बकरियों से 53 बच्चे पैदा हुए जिनकी अच्छी देखभाल के बाद 5 लाख में बेच कर अच्छा मुनाफा प्राप्त किया। अब उनके पास 70 बकरियां हैं। वह पूरे वर्ष भर में सारा खर्चा निकाल कर 50 हजार रुपये महीना कमाना शुरु कर दिया है। अनुसंधान के विशेषज्ञों से समय–समय पर नवीन तकनीक की जानकारी लेकर अपना रहा है। बेअन्तसिंह खेती को छोड़ कर बकरियों का व्यवसाय कर बहुत खुश है और नई–नई तकनीकों की जानकारी प्राप्त करके अपने बकरी पालन व्यवसाय को ओर आगे बढ़ाना चाहते है। **सम्पर्क– बेअन्त सिंह (मो. 7300000155)**

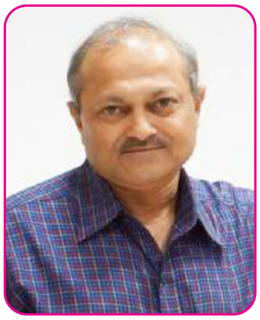

निदेशक की कलम से...

हमारा स्वदेशी गो वंश वरदान है

प्रिय, किसान एवं पशुपालक भाई और बहनों !

नूतन वर्ष की बधाई। यह वर्ष आपके लिए मंगलकारी हो –ऐसी शुभकामनाएं, परम पिता परमेश्व से करता हूं। भारतीय गो वंश ने अपनी श्रेष्ठता, स्वास्थ्यवर्द्धक उत्पादों के कारण पूरे विश्व में एक विशिष्ट पहचान बनाई है। राजस्थान में भी स्वदेशी गो वंश की छह प्रमुख प्रजातियां राठी, थारपारकर, कांकरेज, साहीवाल, गिर और मालवी बहुतायत में पाई जाती है। स्वदेशी गो वंश का दूध ए–2 केसीनो प्रोटीन युक्त है जबकि विदेशी नस्लों में ए–1 केसीनो प्रोटीन युक्त दूध मिलता है। ए–2 दूध हृदय को स्वस्थ रखता है, मधुमेह से बचाता है और बच्चों में मस्तिष्क का बेहतर विकास करता है। आज यूरोप, अमेरिका, ब्राजील, आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड आदि अनेक देशों में ए–2 दूध की मांग और प्रसार बढ़ रहा है। न्यूजीलैंड ने अपने यहां के संपूर्ण गो वंश का भारतीय नस्लों से संकरण कर 10 वर्ष में उन्हें पूर्णतः भारतीय गो वंश में रूपान्तरित कर लिया है। अतः हमें अपने गो वंश की शुद्धता का संरक्षण करना होगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय ने राज्य में छहों स्वदेशी प्रजातियों के पशुधन अनुसंधान केन्द्रों में इनके संरक्षण और संवर्द्धन के उपाय किए हैं। इन केन्द्रों से श्रेष्ठ बछड़े व सांड राज्य की गोशालाओं को उपलब्ध करवाए हैं। इनके जर्म प्लाज्म के संरक्षण और प्रसार का कार्य भी प्रमुखता से किया जा रहा है। आप भी राज्य के 13 जिलों में स्थापित पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों तथा राजुवास मुख्यालय से संपर्क कर अपने स्वदेशी गो वंश के संवर्द्धन और संरक्षण के लिए मार्ग दर्शन और सहयोग प्राप्त कर सकते हैं। **–प्रो. अवधेश प्रताप सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414139188**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत जनवरी, **2018** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**डॉ. शेष आसोपा** 9461160730 पशु व्याधि विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	भैसों में होने वाले प्रमुख रोगों का कारण एवं उनका निवारण	04.01.2018
2	**डॉ. रश्मि सिंह** 9982308670 पी.जी.आई.वी.ई.आर, जयपुर	पशुओं में उपापचीय रोग एवं उनका निदान	11.01.2018
3	**डॉ. शिव कुमार शर्मा** 9414682352 वेटरनरी कॉलेज, नवानियां (उदयपुर)	पशुओं में पाचन सम्बन्धित सामान्य रोग एवं उनकी रोकथाम	18.01.2018
4	**डॉ. मोनिका जोशी** 9413234891 वेटरनरी कॉलेज, नवानियां (उदयपुर)	पशुओं में अधिक दुग्ध उत्पादन के लिए सन्तुलित पशु आहार की उपलब्धता	25.01.2018

मुस्कान !

संपादक
प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
डॉ. नीरज कुमार शर्मा
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. अवधेश प्रताप सिंह द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. अवधेश प्रताप सिंह

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। 1800 180 6224